आर्योदय
ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 330 ARYA SABHA MAURITIUS *28th Mar. to 15th Apr. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

सुपथ का आवाह्न

UNE INVOCATION POUR ÊTRE GUIDÉ DANS LA BONNE VOIE

ओ३म् अग्ने नय सुपथाऽराये अस्मान् निश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते ते नमऽउक्तिं विधेम।।

यजु० ४०/१६

Om ! Agne naya supathā rāye asmānvishwāni deva vayunāni vidwān.
Yuyodhya-smaj-juhurānameno bhuyishthān te nama uktim vidhema.

Yajur Véda 40/16

Glossaire / Shabdārtha :-

Deva Agne : O Seigneur miséricordieux, source de toute lumière, des connaissances, la compassion, du bonheur, de la prospérité, et notre guide; **Vishwāni vayunāni vidwān** : tu es au courant de toutes nos actions; **te** : pour toi/vous; **bhuyishthām** : de temps en temps; **namah uktim vidhema** : nous te prions, nous exprimons notre reconnaissance envers toi pour; **rāyé** : le bonheur suprême en provenance de l'acquisition de la richesse matérielle, et de la compétence intellectuelle et spirituelle; **asmān**: à nous tous; **naya** : emmène nous, guide nous; **supathā** : dans la bonne voie/ le parcours de notre vie; **asmat** : nous, pour nous, par nous; **juhuranam** : le mal, tous nos mauvais penchants; **enah** : les péchés; **yuyodhi** : éloigne de nous.

Avant-propos :

Ce vérset du Yajur Véda (40.16)se trouve aussi dans le Rig Véda et dans quatre autres livres sacrés (Upanishads et Brahman Grantha), où 'Agni' est un nom particulier attribué à Dieu, à qui nous prions de nous guider toujours dans le bon chemin de la vie.

En langage courant 'Agni' veut dire le feu. Outre la chaleur et autres bienfaits, il nous donne la lumière qui éclaire la voie à tout le monde, car aventurer dans l'obscurité est difficile ou impossible. *(cont. on pg. 4)*

N. Ghoorah

रोड्रिग्स आर्यसमाज की स्थापना

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न - प्रधान आर्य सभा मॉरीशस

सन् २०१६ के इक्कीस मार्च को श्री इन्द्रदेव बालगोबिन के नेतृत्व में मॉरीशस के सात ज़िलों - ग्रॉंपोर, सावान, प्लैन विल्येम्स, मोका, फ़्लाक, रिव्येर जु राम्पार और पोर्टलुई से आर्यसमाज की दस शाखाओं से अड़तीस आर्य सदस्य-सदस्याओं का प्रतिनिधि मण्डल विमान द्वारा रोड्रिग्स पहुँचा। इनमें आर्यसभा के प्रधान, डॉक्टर उदय नारायण गंगू जी, सभा-कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्रप्रसाद रामजी जी और आर्यसभा के तीन पंडित श्री मोहनलाल रूपण जी सपत्नीक, श्री रामसुन्दर शोभन जी सपत्नीक और पंडित दयबू धनेश्वर श्याम जी थे। सभी ने रोड्रिग्स के 'फ्लॉंब्वायॉं होटल' में चार दिनों तक डेरा डाला। प्रतिदिन सुबह-शाम, सन्ध्या-मन्त्रों की ध्वनि और सत्संगों के आयोजन से वह होटल एक तीर्थ स्थान बन गया।

२३ मार्च को फाल्गुण मास की पूर्णिमा थी। रोड्रिग्स में बसे हिन्दुओं ने रात्रिकाल में होलिका-दहन का आयोजन किया था।

रोड्रिग्स की राजधानी पोर माचुरें में स्थित 'फ्लॉंब्वायॉं होटल' में मॉरीशस से पहुँचे आर्य बन्धुओं ने वहाँ के कुछ गण्यमान्य सज्जनों के सहयोग से ठीक पाँच बजे सायंकाल में अग्निहोत्र सम्पन्न करके उस सुन्दर होटल में आर्यसमाज की एक शाखा की स्थापना की। श्री रमणीक चित्तू जी को उस समाज का प्रधान नियुक्त किया गया।

२४ मार्च अर्थात् चैत्र कृ० प्रतिपदा को सवा सात बजे रात्रि में रोड्रिग्स एम.बी.सी. ने अपने रात्रिकालीन टी.वी. समाचार में स्थापना-समारोह का विस्तृत वृत्तान्त प्रसारित किया ।

२५ मार्च के प्रातःकाल में श्री रमणीक चित्तू जी के प्रांगण में, जो समुद्रतट के एकदम निकट है, आर्यसभा एवं रोड्रिग्स आर्यसमाज के प्रधान के कर-कमलों द्वारा 'पोरमाचुरें आर्यसमाज' की शिलान्यास-विधि मॉरीशस से पहुँचे प्रतिनिधि मण्डल के समस्त सदस्य-सदस्याओं की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। *शेष भाग पृष्ठ २ पर*

सम्पादकीय

मानव और समाज

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपने समाज से अलग नहीं रह सकता है। उसे नित्य दूसरे व्यक्तियों के सहयोग की आवश्यकता होती है। एक दूसरे के सोच-विचार, अनुभव, सहयोग और पुरुषार्थ से वह सुगमता पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है।

मानव और समाज में अटूट सम्बन्ध होता है। चन्द अच्छे जनों के संगठन से एक श्रेष्ठ समाज स्थापित होता है। समाज की स्थापना हो जाने पर दोनों का गहरा सम्बंध जुड़ जाता है। मनुष्य और समाज में सम्पर्क क़ायम होने पर इंसान का चारित्रिक विकास होने लगता है और प्रत्येक सदस्य के निःस्वार्थ सेवा कार्यों से समाज प्रबल होता जाता है।

श्रेष्ठ जन, परोपकारी, दानी, तपस्वी, पुरुषार्थी, बुद्धिजीवी, न्यायप्रिय, निःस्वार्थ सेवी और धार्मिक जनों के सहयोग से एक प्रबल समाज की स्थापना की जाती है, ताकि मानव समाज का सुधार और मनुष्य का कल्याण हो सके । इसी उद्देश्य से आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बंबई में ७ अप्रैल सन् १८७५ ई० को नवसंवत्सर की पुण्य तिथि चैत्र सुदी प्रतिपदा को श्री माणिकचन्द जी की एक मनोरम वाटिका में विधिवत आर्यसमाज की प्रथम स्थापना की थी। आर्यसमाज के आंदोलन कार्य एवं गतिविधियों निमित्त २८ नियम बनाए गए फिर बाद में सुधार करके १० नियम निश्चित किए गए। जिन नियमों के आधार पर आज तक आर्यसमाज के सभी कार्यक्रम निर्धारित हैं।

संसार में मनुष्य जाति को सही मार्गदर्शन करने वाला संगठन आर्यसमाज ही है, क्योंकि यह वेदों का प्रचारक, मानव का उद्धारक और समाज सुधारक समाज है, इसीलिए विश्व के किसी भी कोने में श्रेष्ठ जनों द्वारा स्थापित आर्यसमाज मानव समुदाय का कल्याण करता रहा और भविष्य में करता रहेगा।

आर्यसमाज का द्वार हर एक सज्जन, ईमानदार, चरित्रवान, परोपकारी, स्वाध्यायशील और निःस्वार्थ प्रेमी के लिए खुला है और हमेशा खुला रहेगा। संसार के जिस देश में आर्यसमाज का उदय हुआ है, वहाँ मानव जाति को सत्य का आलोक प्राप्त हुआ। आज इस सुधारवादी संगठन के अद्भुत कार्यों से मानव समाज का इतना उत्थान हुआ है, जिसकी प्रसिद्धि देखकर आर्य जगत को बड़ा गर्व है ।

हमारे देश में ११३ वर्षों से महाप्रतापी, तपस्वी, त्यागी, वेद-प्रेमी और समाज-सेवी आर्य सपूतों के समर्पित जीवन से आज तक आर्यसमाज का आंदोलन ज़ोरों से चल रहा है, मॉरीशस के जिस शहर, नगर और गाँव में आर्यसमाज जागरूक और जीवित है वहाँ आर्य सदस्यों के अलावा अन्य लोगों के जीवन में भारी सुधार हुआ है, क्योंकि जहाँ कहीं भी आर्यसमाज उदित होता है, वहाँ मानव समाज में सवेरा होता है और हमारे जीवन से घोर कालिमा हट जाती है ।

आज हमारे देश में आर्य सभा के तत्वावधान में लगभग ४७५ आर्यसमाज शाखाएँ स्थापित होकर वैदिक धर्म का प्रचार, सामाजिक सुधार, महिलाओं का उद्धार, युवा-युवतियों का उत्थान अनाथ-असहायों की सेवा और छात्र-छात्राओं को शिक्षा प्रदान करने में पूरा सहयोग दे रहे हैं। हम उन सामाजिक प्रेमियों के प्रति आभारी हैं, जो आर्यसमाज का नाम रोशन कर रहे हैं।

आज विज्ञान और तकनीकी की प्रचुर उपयोगिताओं से हमारे युवक-युवतियाँ कई प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त कर रहे हैं। इन साधनों से उनके दैनिक जीवन में विभिन्न प्रकार की सुगमताएँ उपलब्ध हैं। इसीलिए कंप्यूटर, ईमेल, इंटरनेट आदि की ओर उनका झुकाव अधिक है। आज समय की पुकार यह है कि हम इन्हीं साधनों द्वारा हमारे उभरते हुए जवानों को वैदिक-धर्म की ओर आकर्षित करें, वेदों की सत्यविद्याएँ उन लोगों तक पहुँचाएँ, ताकि वे आर्यसमाज की गतिविधियों से अवगत हों और भविष्य में आर्यसमाज के कर्मठ सेवक बनकर सभी शाखा समाजों का पुनः निर्माण करें।

हमें पूरा विश्वास है कि अगर हमारे सभी सदस्य और पदाधिकारी आर्यसमाज के १० नियमों का पालन करते हुए सामाजिक सेवा-कार्यों में समर्पित हो जाएँगे तो अवश्य ही यहाँ आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल होगा। मानव और समाज का गहरा सम्बन्ध जुड़ जाने से हिन्दू समाज का सिर ऊँचा होगा।

मनुष्य जाति को मानवता का पाठ पढ़ाने के लिए श्रेष्ठ और प्रबल सामाजिक संस्थाओं का पूरा योगदान होता है, इसीलिए हर एक आदमी का परम कर्तव्य है कि वह श्रेष्ठ जनों के संगठन से नाता जोड़ता रहे। ध्यान रहे कि मनुष्य के पूरे सहयोग से समाज प्रबल होता है और प्रबल समाज के बल पर मनुष्य चरित्रवान, गुणवान आर्यपुत्र कहलाता है ।

बालचन्द तानाकूर

स्थापना के परिप्रेक्ष्य में

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न

स्वामी जी के जीवन के प्रारंभिक काल में हम देखते हैं कि वे सच्चे शिव की खोज की धुन में थे। फिर जब बहन और चाचा की मृत्यु हुई तो मृत्यु विषय के जिज्ञासु बने। और १६ वर्ष की उम्र से लेकर जब तक पितृ गृह न छोड़ा २१ वर्ष की उम्र तक ये दोनों जानकारियाँ पीछा न छोड़ा। घर से निकले तो उन्हें समझाया गया कि इन दोनों बातों की सिद्धि एक मात्र योग साधन से होगा, दूसरा कोई चारा नहीं। इस प्रकार योग-विद्या प्राप्त करने हेतु उन्होंने क्या नहीं किया। प्रबुद्ध पाठकों को उनके १५ वर्षों का वृत्तांत भली-भाँति मालूम है।

क़रीब तीन वर्षों तक गुरु विरजानन्द के यहाँ रहकर व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर लिया। इससे वेदों का सही ज्ञान प्राप्त कर लिया। जाने लगे तो गुरु ने प्रतिज्ञा करवाई कि भारत वर्ष की दशा सभी दृष्टि से गिरी हुई है तब गुरु को वचन दिया और निकल गये देशोद्धार के लिए। जो भी कदम उठाते देश व जाति के उद्धार के लिए। जैसे-जैसे बढ़ने लगे विचार भी बढ़ने लगे अब सारे संसार के उपकार करने के लिए निकल पड़े।

अधिक से अधिक लोगों का कल्याण हो, अगर इस भावना को देखना हो तो आर्यसमाज के दस नियमों को देखना चाहिए। एक दो नियमों को छोड़कर हर एक में मानव जाति के उद्धार की बात निहित है।

'संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'

दूसरे नियम में परमपिता परमात्मा के गुणों को गिनाते हुए लिखते हैं ईश्वर 'न्यायकारी और दयालु है हम इंसान को भी दयालु होना चाहिए। अगर दया नहीं होगी तो क्षमा नहीं कर सकते – स्वामी जी के जीवन में अनेक स्थलों पर क्षमा प्रदर्शित करते हुए देखे गए हैं ।

एक दो उदाहरण देते हैं –

१. एक व्यक्ति ने स्वामी जी को पान दिया जिसमें विष था। स्वामी जी को मालूम हो गया। उसे क्षमा कर दिया।

२. एक नौकर ने स्वामी जी की घड़ी चुरा ली । दूसरे कर्मचारी ने चोर का पता लगा लिया। उसे पकड़कर स्वामी जी के पास लाया गया। स्वामी जी ने क्षमा करते हुए कहा आगे चोरी न करें।

३. सब तो सब जिस व्यक्ति ने स्वामी जी को भयंकर विष दिया। उसे क्षमा करते हुए पैसा दिया और ऊपर से बताया किधर जाना चाहिए। स्वामी जी ने भारत को उसके खोए हुए गौरव को दिलाने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की।

ARYA SAMAJ STHAPNA DIVAS 2016

Dharamveer Gangoo – President Mauritius Arya Yuvak Sangh

Every year Arya Sabha and its branches celebrate the Arya Samaj Sthāpnā Divas on Yugādi with great zeal and enthusiasm. Swami Dayanand founded this great movement with a view to keep his work ongoing. By now everyone is familiar with the aims and objectives of the Arya Samaj.

Why celebrate Arya Samaj Sthapna Divas?

A simple answer is to create awareness among the new generation about the immense contribution of the Arya Samaj and Swami Dayanand to the betterment of the world. We cannot deny the fact that the great Rishi inspired Indians for 'Swarajya'. Immediately a country-wide awareness campaign started and many freedom fighters joined forces to free India from the chains of slavery. Swamiji laid emphasis on the fact that before liberating the country from intruders, we need to free ourselves from ignorance and all the evil practices that hamper our progress.

In Mauritius too, the Arya Samaj had a major role to make this country independent. Arya Samaj in Mauritius has worked hard for over a century to safeguard Vedic values, culture, propagation of Hindi language, etc..

The celebration of Sthapna Divas of Arya Samaj, is time to commit ourselves to fight the hydra-headed evils that are creating havoc in our society where mainly youngsters are becoming easy prey. We should resolve to rid society from substance abuse, i.e. drugs and alcohol. A major annual event would be to identify one or two major social ills and tackle them accordingly.

Nowadays, youngsters are the prime scapegoat with claims that they are going astray. Everyone is aware of this situation, but nobody is coming forward with solutions to bring back our youth on the right track. Arya Samaj has always been the torch bearer leading our youth to follow the path of righteousness and to be a good citizens. We wish that the Arya Samaj movement will enhance its services in different fields and will be successful in realizing 'Krinvanto Vishwamāryam'.

।। ओ३म् ।।

परमेश्वर व जीवों के परस्पर छह मुख्य सम्बन्ध हैं –

प्रथम सम्बन्ध – पिता और पुत्र का है।
द्वितीय सम्बन्ध - माता और पुत्र का है।
तृतीय सम्बन्ध - उपास्य और उपासक का है।
चतुर्थ सम्बन्ध - गुरु और शिष्य का है।
पंचम सम्बन्ध - राजा और प्रजा का है।
षष्ठ सम्बन्ध - व्यापक और व्याप्य का है।

- इन छह सम्बन्धों को जानकर इनको अपने व्यवहार में लाने से ईश्वर की प्राप्ति सरलता से होती है।

- इन सम्बन्धों के प्रयोग से विवेक की प्राप्ति होती है, विवेक से वैराग्य की प्राप्ति होती है और अभ्यास व वैराग्य से समाधि की सिद्धि होती है।

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

पृष्ठ १ का शेष भाग

शिलान्यास-विधि से पूर्व अग्निहोत्र हुआ, जिसमें पूर्णाहुति से पहले मॉरीशस के सभी बन्धुओं ने गायत्री मन्त्र का उच्चारण करके आहुतियाँ दीं। उपस्थित जनों के मुखमण्डल पर उत्साह एवं प्रसन्नता छायी हुई थी। शांतिपाठ से पूर्व सभी ने महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के जयघोष से गगन को गुँजा दिया।

आर्य बन्धुओं को स्मरण रहे कि महर्षि दयानन्द ने चैत्रमास की शुक्ल प्रतिपदा को सन् १८७५ में बम्बई (वर्तमान मुम्बई) में आर्यसमाज की स्थापना की थी। 'पोर माचुरें आर्यसमाज' भी चैत्र मास की प्रतिपदा को ही स्थापित किया गया, परन्तु शुक्ल प्रतिपदा को नहीं, कृष्ण प्रतिपदा को।

मॉरीशस और रोड्रिग्स की राजधानियों में स्थापित आर्यसमाज की एक और समानता रेखांकित करने योग्य है। वह यह कि 'पोर्ट लुई आर्यसमाज' की स्थापना भी पोर्ट लुई के एक होटल में ही हुई थी। नाम था 'हिन्दूहोटल', जो Prince Regent Street में पाया जाता था।

रोड्रिग्स आर्यसमाज के अधिकारियों के नाम इस प्रकार हैं – *प्रधान* - श्री रमणीक चित्तू जी, *उपप्रधान* - Mr Jean Louis Lisette जी, *मन्त्रिणी* - Philippe Anne Marie, *उपमन्त्री* - श्रीमती मिनाक्षी तिवारी चित्तू जी, *कोषाध्यक्षा* - Mrs Willina Etienne, *उपकोषाध्यक्ष* - श्री सुरुजदत्त गोखूल जी, *पड़तालक* - श्री आनन्द साकाराम जी, *सदस्य* – *श्रीश्री* – प्रेम रौथो, आनन्द बानी, जॉन लोरेल गियोम, उदय कल्पू, वर्णा कोलेत, शान्ति रौथो, श्रीमती दिलूकशी चित्तू, त्रिलोकसिंग रामबरथ, श्रीमती साबिता देवी रामबरथ, श्रीमती मानती बादल, श्रीमती रोशनी साकाराम, रामकृष्ण भोवानी, नित्यानन्द लोबिन्द और श्रीमती सुनीती बानी ।

इस नये आर्यसमाज की स्थापना में अनेक जनों का योगदान रहा है, विशेषकर 'फ्लाँब्वायाँ होटल' के मालिक, श्री बिसुन मंगरू जी का। हम सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं ।

Establishment of the Arya Samāj in Rodrigues

23 March 2016: a new branch of the Arya Samaj was established in Port Mathurin, Rodrigues; another milestone in the history of Arya Sabhā Mauritius, the apex institution of the Arya Samāj movement in Mauritius. The date as per the Vedic calendar was: *Vikram Samvat 2072;* month – *Phālgun*; day – *Purnimā* (full moon).

At a meeting held on Thursday 24.03.2016, i.e. *Vikram* Samvat 2072, month of ***Chaitra*** - *Krishna* ***Pratipadā***, it was resolved to proceed with the *Shilānyāsa vidhi* (laying of the foundation stone) of the Port Mathurin Arya Samāj Mandir, Rodrigues be held on the next day 25.03.2016.

Maharishi Swami Dayānand Saraswati founded the Arya Samāj in Bombay (now Mumbai) on 10 April 1875 which as per the Vedic calendar was: Year - *Vikram Samvat 1932*; Month of ***Chaitra***, day – *Shukla* ***Pratipadā***.

The Arya Samāj in Rodrigues was founded in **'Le Flamboyant Hotel', Port Mathurin** in the presence of Dr. Oudaye Nārain Gangoo, Arya Ratna, President of Arya Sabhā Mauritius. He also proceeded with the laying of the foundation stone after participating as Yajmān at the Yajna for the occasion.

The present 'Arya Sabhā Mauritius' has its roots in the establishment of the Arya Samāj, on 08 May 2011 at the **'Hindu Hotel'**, Prince Regent Street, Port Louis in the presence of Manilāl Maganlāl Doctor. It was registered as the Arya Paropkārini Sabhā in 1913. The various attempts in 1903, 1906, 1907 and 1910 to establish the Arya Samāj in Mauritius were short-lived.

After Yajna and satsang, the following persons were appointed as Office bearers of the Rodrigues Arya Samāj (branch No. 474 of Arya Sabhā Mauritius) : *President* : Ramnik Cheetoo; *Vice-President* : Jean Louis Lisette; *Secretary* : Philippe Anne Marie; *Asst. Secretary :* Meenakshi Tivary Cheetoo; *Treasurer* : Willina Etienne; *Ass. Treasurer :* Sooroojduth Gokhool;
Other members of the Executive Committee: Prem Rowtho, Anand Banee, Jean Laval Guiyom, Oodaye Kulpoo, Varna Colette, Shanti Rowtoo; *Auditor* : Anand Sacaram

Twenty nine (29) persons registered themselves as members of the Rodrigues Arya Samāj at the time of its establishment.

A delegation comprising of thirty eight (38) persons from Arya Sabhā Mauritius and its branches, i.e. Arya Samājs & Arya Mahila Samājs had travelled to Rodrigues to attend to this historical event :
(1) Dr. Oudaye Narain Gangoo, President of Arya Sabhā Mauritius (ASM); (2) Shri Rajendra Prasad Ramjee, Treasurer of the Sabhā; (3-4) Pt. Mohunlall & Smt. Lutchmanee Devi Roopun of Port Louis A.S.;
(5) Pt. Dhaneshwar (Shyam) Daiboo, Riviere des Creoles A.S.; (6-7) Pt. Ramsoondur & Smt. Druptee Sobhun, of Mare Tabac A.S.; (8) Shri Indurdeo Balgobin of Mare La Chaux A.S.; (9-10) Shri Bhoorundranath & Smt. Lilamunnee Kureeman of Ripailles A.S.; (11-12) Shri Rajendra & Smt. Ramaotee Hunnuman of L'Avenir-St. Pierre A.S.; (13-14) Shri Beejai & Smt. Geeta Devi Sham of …. A.S.; (15-16) Shri Breejanund & Smt. Padmaotee Seelochun of Piton A.S.; (17-18) Shri Balchand & Smt. Gaitri Soba Dewdanee of Poudre D'Or Hamlet A.S.; (19-20) Shri. Premnath & Smt. Rajantee Cullychurn of Savanne Aryan Citizens Association; (21-22) Shri Naraindut & Smt. Ramawtee Seebarrun of Moka A.S.; (23-24) Shri Dharamdeo & Smt. Shradha Devi Bundhun of Hermitage A.S.; (25) Shri Hurry Persad Chumun of L'esperance Trebuchet A.S.; (26) Shri Kreshnadutt Seebarrun of Moka A.S.; (27) Smt. Ramawtee Ramdhuny, (28) Smt. Rambha Raghooban, (29) Shri. Chandrika Prasad Raghooban, (30) Smt. Sarawatee Foolee, (31) Smt. Indira Deerpaul, (32) Smt. Vasantee Devi Ramtohul & (33) Smt. Rajoo Seebajun, (34) Smt. Jayantee Hannah of L'Avenir-St. Pierre A.S.; (35) Shri Premjeean Reejhaw of Grand Port A.S.;(36) Smt. Anjanee Bahadoor; (37) Smt. Hemwantee Nepal (38) Smt. Indrany Naynan

Arya Sabhā Mauritius conveys herewith its gratitude to all those who joined efforts to make this event a success; our special thanks to the people of Rodrigues for their warm welcome and to Shri Bissoon Mungroo, Managing Director of Le Flamboyant Hotel, Port Mathurin, Rodrigues.

The Sabhā affirms that this new venture will consolidate its diverse activities in line with the 6th principle of the Arya Samāj, namely - uplifting the physical, moral / spiritual and social standards of all.

(English Report by Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanācharya)

आर्यसमाज और उसके उद्देश्य

हरिदेव रामधनी, आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मोरिशस

आर्यसमाज वह संस्था है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने १० अप्रैल १८७५ को मुंबई में की थी। आर्यसमाज का अर्थ है – आर्यों का समाज अर्थात् श्रेष्ठ, शिक्षित एवं गुण-सम्पन्न लोगों का समाज। यह समाज अपने आप में कोई नया मत या पंथ नहीं है, बल्कि एक आंदोलन है, जिसका उद्देश्य है मानव का भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास करना तथा समस्त प्राणियों के प्रति उपकार करना। इसीलिए महर्षि जी ने आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य (Vision) ऋग्वेद के मन्त्र ९-६३-५ के आधार पर **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् विश्व को आर्य बनाना रखा है और उसका उद्देश्य (Mission) आर्यसमाज के छठे नियम इस प्रकार है - *'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'*

आर्यसमाज को सही दिशा देने के लिए महर्षि जी ने दस नियम बनाए और इनको पढ़ने और चिंतन करने से आपको दिख पड़ेगा कि ये सभी नियम सार्वभौम हैं; अर्थात् महर्षि ने आर्यसमाज को किसी दायरे या सीमा में न बाँधकर पूरे संसार के कल्याण के लिए बनाया है। आर्यसमाज का आधार वेद ज्ञान है। यह ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि की आदि में ईश्वर ने मनुष्य को प्रदान किया था, जिससे वह अपनी भौतिक उन्नति करते हुए मुक्ति तक पहुँच सके। आर्यसमाज को स्थापित करते हुए महर्षि का यही उद्देश्य था कि सत् सनातन वैदिक धर्म का पुनः प्रचार-प्रसार किया जाय, क्योंकि महाभारतकाल के बाद अविद्या अन्धकार, अंधविश्वास एवं अन्धपरम्पराओं के घने बादल ने भारतीय जनता को इस तरह जकड़ लिया था कि वे गुमराह होकर पथभ्रष्ट हो गए थे। वही भारतीय जनता जिसकी गौरवमयी और वीरता भरी अतीत थी, अपनी पहचान खोकर अपने ही देश में दास बनी बैठी थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाजोद्धार के लिए आर्यसमाज को अपना साधन बनाया और साथ ही कुछ सिद्धान्त निर्धारित किए जिससे हर किसी का उपकार हो सके। इन सिद्धांतों में कुछेक निम्न प्रकार है :-

१. सर्वप्रथम महर्षि ने ईश्वर के स्वरूप की व्याख्या यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय (४०-१७) के अनुसार करते हुए बताया की ईश्वर सत्य-स्वरूप है, चित अर्थात् चेतन और ज्ञान से ओत-प्रोत है। अतः उनमें लेश मात्र भी अविद्या नहीं, वे सुख स्वरूप भी हैं और उन्हीं के शरण में सुख और शांति पा सकते हैं। वह ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है और कोई भी काम करने के लिए किसी और की सहायता की आवश्यकता नहीं या उन्हें शरीर धारण करना नहीं पड़ता। वह परमपिता परमेश्वर एक है और उसका सबसे प्यारा नाम 'ओ३म्' है उसी की उपासना करनी चाहिए। आर्यसमाज में किसी भी मूर्ति या प्रतिमा की उपासना करना निषेध है।

*२. **'वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्'** यजुर्वेद के इस मन्त्रांश के आधार ईश्वर वह महान् पुरुष या पहला गुरु है जिससे हमें वेदज्ञान प्राप्त हुआ है, उसी वेदज्ञान के स्वाध्याय और जीवन में चरितार्थ करने से हम अपने और इस मानव समाज का कल्याण कर सकते हैं। महर्षि ने वेद के अलावा आर्ष ग्रंथों को मान्यता दी है, अन्यों को नहीं।*

३. महर्षि जी सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि किसी भी जाति का कल्याण नहीं हो सकता बिन सत्तज्ञान के अतः आर्यसमाज ने विद्या का द्वार हर किसी के लिए खोला है चाहे महिला हो या पुरुष, या किसी भी वर्ग का क्यों न हो ।

४. महिलाओं का सशक्तिकरण एवं शिक्षित करना अनिवार्य है, क्योंकि बिन शिक्षित महिलाओं के अच्छा परिवार और श्रेष्ठ समाज का निर्माण करना संभव नहीं।

५. वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार हो, न कि जन्म के आधार पर आर्यसमाज सबके बराबर अधिकार के लिए लड़ता है, जिससे किसी पर कोई अन्याय या अत्याचार न हो।

६. आर्यसमाज कर्मफल सिद्धान्त पर विश्वास करता है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, पर फल ईश्वर के आधीन रहता है। वैदिक सिद्धान्त के आधार पर पाप कर्म के लिए क्षमा नहीं होता।

७. वैदिक सिद्धान्त में ज्ञान और विवेक (logic and reasoning) अहम होता है। अवैदिक तरीक़े से ईश्वरोपासना करना या प्रकृति नियम के विरुद्ध अन्ध परम्पराओं पर विश्वास करना वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध है और इससे कोई यथोचित फल नहीं मिलता।

८. आर्यसमाज शान्ति, भाईचारे और विश्वबंधुत्व का प्रचार करता है। द्वेष या हिंसापूर्ण माध्यमों से हम कभी भी संसार में मानव कल्याण नहीं कर सकते ।

९. महर्षि दयानन्द ने कहा है कि उत्तम मनुष्य बनने के लिए व्यक्ति को चाहिए कि वह वेद एवं सत्य शास्त्रों का स्वाध्याय करे, सत्याचरण और अच्छे गुणों को धारण करे, अभिमान त्याग लोगों पर दया की भावना रखे, नित्य संध्या करे और परोपकार के कार्यों में हमेशा संलग्न रहे तथा आत्मोनती के लिए योग एवं ईश्वरोपासना करना आवश्यक है ।

महर्षि जी के इन सिद्धांतों से आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी, सशक्त, प्रगतिशील एवं धर्म सुधारवादी आंदोलन के रूप में उभरा। इससे प्रभावित होकर कई युवा नेता के रूप में उभरे जो महर्षि जी के निर्वाण के बाद आर्यसमाज के यश को बुलंदियों तक पहुँचाया। इनमें स्वामी श्रद्धानंद, पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज और पण्डित लेखराम के नाम अग्रगण्य हैं। आर्यसमाज को उन्नत बनाने के लिए इन लोगों ने अपने आपको आहूत कर दिया, जिसके फलस्वरूप असंख्य लोग आर्यसमाज के कट्टर और सक्रिय सदस्य बनकर इस समाज को बदल डाला। महर्षि जी का सामाजिक जीवन बड़ा अल्प रहा। उन्हें भारत ही के सभी प्रान्तों में जाने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ अन्यथा आज भारत ही नहीं, बल्कि विश्व का कुछ और रूप होता। भारतवर्ष के दक्षिण प्रांत तो वैदिक प्रचार से लगभग शून्य रह गया।

आज १४१ साल बाद ऐसे कर्मठ सेवकों की आवश्यकता महसूस की जा रही है जो आर्यसमाज को पुनः उनका स्वर्ण युग दिला सके। आज अधिकतर लोग आर्यसमाज की बही में अपना नाम तो दर्ज करा लेते हैं; पर तन-मन-धन से उस समाज की सेवा नहीं करते। क्या हमारा कर्तव्य नहीं बनता है कि हम समर्पित आर्य सेवक बनकर उस महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें और आर्यसमाज के ऋण को चुकाएँ। हमें पूर्णाशा है कि आर्यसमाज स्थापना दिवस के इस पवित्र अवसर पर कुछ संकल्पी लोग अवश्य आगे बढेंगे। सभी को 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' एवं 'नव सम्वत्सरोत्सव' की मंगल कामनाएँ।

सृष्टि उत्पति और आर्यसमाज

पण्डित यश्वन्तलाल चूड़ामणि,एम.एस.के, आर्य भूषण

मनुष्य ईश्वर की रची हुई सृष्टि का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण अंग है। मनुष्य की रचना करके ईश्वर ने उन्हीं के ऊपर संसार चलाने का उतरदायित्व डाल दिया। परमात्मा के निज वेद-ज्ञान को प्राप्त करके उसके प्रचार, प्रसार एवं उसकी रक्षा करने की जीम्मेदारी भी मनुष्य के ऊपर ही है। इस कार्य को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने लिए ही ईश्वर ने मनुष्य को ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता दी अर्थात् ज्ञानेन्द्रिय। प्राप्त ज्ञान को संचित करने की क्षमता दी अर्थात् मस्तिष्क। फिर उस ज्ञान को अन्यों तक पहुँचाने की भी क्षमता दी अर्थात् वाणी। वेद-ज्ञान के अन्तर्गत मनुष्य को जानने योग्य तीन बातें अनिवार्य बताईं। वे हैं ईश्वर, जीव और प्रकृति। इन्हीं तीनों के योग से इस सृष्टि की रचना हुई।

सृष्टि उत्पति के विषय में अब तक केवल स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने ही सही जानकारी दे पाई है। अन्य धर्मावलम्बियों ने अपने ग्रन्थों के आधारा पर सृष्टि उत्पति की जो बातें बताई हैं वे सरासर मिथ्या, निर्मूल और अवैज्ञानिक हैं। वे प्रायः पौराणिक एवं काल्पनिक कथाओं (mythology) पर आधारित हैं। उन कथाओं में वास्तविकता लेशमात्र भी नहीं है। इसीलिए कोई भी ग़ैर-वैदिक संस्था कभी भी सृष्टि उत्पति का विषय नहीं छेड़ते हैं। स्वामी दयानन्द ने ईसाई पादरियों और मुसलमान मौलवियों के साथ इस विषय पर अनेक शास्त्रार्थ किये थे। एक-एक करके स्वामी जी ने सबको परास्त कर दिया था। सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के बारहवें अध्याय में स्वामी जी ने सृष्टि उत्पति की पूरी वेदोक्त जानकारी दी है। आज तक किसी भी भारतीय या पाश्चात्य विद्वान् ने वेदों की उन बोतों को निर्मूल नहीं सिद्ध कर पाया। अपने ग्रन्थों में स्वामी जी ने स्पष्ट बता दिया है कि इस वर्त्तमान सृष्टि की उत्पति कब, कैसे और क्यों हुई। सृष्टि क्रम का उल्लेख करके उन्होंने बड़े-बड़े वैज्ञानिकों की आँखें खोल दीं। इन्हीं मूल बातों के आधार आज विज्ञान बहुत आगे बढ़ रहा है। वर्त्तमान भूगोल और खगोल के सर्वमान्य ज्ञान का आधार केवल वेद है।

सृष्टि की रचना करके उसको चलाना और अन्त में प्रलय करना परमात्मा का स्वाभाविक कर्म और धर्म माना गया है। मनुष्य के लिए जिस प्रकार रात के बाद दिन और दिन के बाद रात होती है उसी प्रकार ईश्वर के लिए सृष्टि काल ब्रह्म-दिन कहलाता है और प्रलय काल ब्रह्म-रात्रि कहलाती है। एक ब्रह्म-दिन की अवधि चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष (४,३२०,०००,००० years) की बताई जाती है। इतनी ही अवधि ब्रह्म-रात्रि की भी होती है। सृष्टि उत्पति विषय के अन्तर्गत स्वामी दयानन्द जी ने चतुर्युग के आधार पर गिनती करके बता दिया है कि इस वर्तमान सृष्टि की आयु अब तक एक अरब छटान्बे करोड़ आठ लाख तिरपन हज़ार एक सौ सोलह वर्ष की है। सृष्टि की इस आयु को याद रखने के लिए स्वामी जी ने हर एक बृहद धार्मिक अनुष्ठान का प्रारम्भ **संकल्पोच्चारण** से करने का आदेश दिया है। आजकल हवन की अनेक पुस्तकों में इसका संकेत दिया गया है जो निम्न प्रकार से हैं – **ओ३म् तत्सत् श्रीब्रह्णों द्वितीये प्रहरोत्तरार्द्धे वैवस्वते मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे एकवृन्द षण्णवतिकोटि अष्टलक्ष त्रिपञ्चाशत्-सहस्र ..... - शततमे सृष्टि-संवत्सरे ..... अधिक द्विसहस्रे वैक्रमाब्दे।** *(रिक्त स्थानों में वर्ष के आधार पर संख्या बोली जाती है)*। आर्यसमाज की स्थापना के बाद जब स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थों का पठन-पाठन गहराई के साथ होने लगा तब सृष्टि उत्पति के विषय में लोगों को सही जानकारी मिली। मनुष्य को वस्तु निर्माण के तीन कारणों का ज्ञान हुआ – निमित्त कारण, उपादान कारण और साधारण कारण। मानव जीवन के साथ ईश्वर की रची हुई वस्तुओं के घनिष्ठ सम्बन्ध का पता चला जैसे सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी तथा औषधि और वनस्पति।

स्वामी जी ने बड़ी दूरदर्शिता के साथ आर्यसमाज की स्थापना सृष्टि उत्पति की तिथि के साथ संलग्न कर दिया। आजकल ये दोनों तिथियाँ अर्थात् सृष्टि उत्पति दिवस और आर्य समाज स्थापना दिवस एक साथ एक उत्कृष्ट आर्य पर्व के रूप में हर साल चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जाता है। इन दो पर्वों की गतिविधियों के अन्तर्गत वेद के त्रैतवाद सिद्धान्त का गहरा प्रचार होता है अर्थात् ईश्वर, जीव और प्रकृति। आर्यसमाज के वेद प्रचार प्रणाली का यह प्रमुख उद्देश्य है। मनुष्य को उचित है कि वह इन दोनों पर्वों मनाते हुए वेद ज्ञान के अनुकूल अपने जीवन को उनके लक्ष्य तक पहुँचावें ।

PLAINES WILHEMS ARYA ZILA PARIHAD

Dayanand Dashamee (Jayanti) & Rishi Bodh Mahotsav at the compound of the PCK Aryan Vedic school, Vacoas (Friday 04 to Monday 07 March 2016

Dhanyavaad patra

02 April 2016

We express herewith our sincere thanks to the Respected Panditas & Pandits, President & Members of all Arya Samajs & Mahila Samajs of Plaines Wilhems, and Well-wishers for their collaboration towards the successful organization of the program.

Our special thanks to the following:

- The Manager & Head Teacher of PCK Aryan Vedic School
- The Vacoas Arya Samaj for their continued support throughout
- The St. Paul Arya Samaj & Mahila Samaj, the Carreau Lalianne Arya Samaj
- The President & Members, the Manager & Staff of Arya Sabha
- The President, Members & Manager of Balgobeen Ashram
- The Municipality of Vacoas-Phoenix
- The Police Force
- The Mauritius Broadcasting Corporation & Press

S. Peerthum, *Hon. President*
R.Gowd, *President*
S. Ramdoss, *Secretary*
D. Damree, *Treasurer*

'आर्यसमाज' संस्थायाः उद्देश्यम्

वेदोद्धारकः मानवमात्रहित सम्पादकः अज्ञानान्धकार-विनाशकः, पाखण्डोन्मुलकः, राष्ट्रोद्धारकः, स्वामी दयानन्दः आर्यसमाजस्य स्थापनां कृतवान्। आर्याणां – श्रेष्ठपुरुषाणां समाजः इति आर्यसमाजः। आर्य समाजस्य आरम्भिक काले अस्य सदस्यैः देशहिताय समर्पण रूपेण कार्यं कृतम्। ते देशस्य स्वतन्त्रतायै कारागारे अनेक कष्टान् सहर्षं असहन्त ।
आर्यसामाजिकस्य त्यागेन तपसा च देशः स्वातन्त्रयम् अधिगतवान्।

निश्चयेन 'आर्यसमाज' स्थापनायाः प्रमुखम् उद्देश्यं तु संसारस्योपकारकरणं वेदानमुद्धरणं, जन्मानुसारी वर्णव्यवस्थां निराकृत्य गुणकर्मानुसारेण वर्णव्यवस्था स्थापनं, 'स्त्री शूद्रो' वेदं नाधीयताम् इतिवचनस्य निस्सारतां प्रतिपाद्य सर्वेषां कृते समान रूपेण वेदाध्ययनस्याधिकारार्थम्, अज्ञाननिर्मितपाखण्डोन्मूलनार्थम्, अस्पृश्यता निवारणार्थम्, पंचयज्ञस्य महत्त्व वर्णनार्थम्, गुरुकुलशिक्षाप्रणाली स्थापनार्थम्, अनाथविधवानां कल्याणार्थम्, सदाचारस्य पालनार्थम् वेद विरुद्धमतनिराकरणार्थम्, कर्मणः फलं अवश्यं भोक्तव्यम्। किमधिकम् समग्रसंसार-स्थित प्राणिमात्रकल्याणार्थम्, गौकृष्यादि महत्त्व प्रतिपादनार्थम् आर्यसमाजस्य प्रमुख उद्देश्यमस्ति ।

सत्यमेतद्-अधुनापि समाजे पाखण्डं विवर्धितम्, स्वार्थवृत्तिः, संग्रहवृत्तिः एवं भोगवृत्तिः विवर्धितं तेषां विनाशाय आर्यसामाजिकाः प्राणपणेन प्रयासं कुर्युः। अन्ते च इयमेव कमनीया कामना अस्ति -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग्भवेत्।

English Translation of the Sanskrit Text

A pioneer in the dissemination of the Vedic knowledge, a well-wisher of the human race, a reformer fighting against ignorance, blind faith and superstitions, a visionary for overall welfare, Swami Dayanand was the founder of the Arya Samaj. Arya means people who preach-and-practice noble ideals. Samaj is association. Thus Arya Samaj is the association of people who preach-and-practice noble ideals. Arya Samaj has since its creation worked for national welfare and many of its stalwarts have put up tremendous sacrifice in the struggle for independence.

The prime object of the Arya Samaj is to do good to the whole world, amongst others: disseminate the Vedic values for better living; eliminate the rigid birth based caste system and promote meritocracy based on character, deeds and temperament or frame of mind; eliminate the abominable discrimination against women (e.g. denial of access to read the Vedas and ancillary Vedic literature); eradicate the awful concept of untouchability; uphold the five (5) prime duties (*Mahayajna*) to be performed by all; re-establish the Gurukul holistic approach in education for the physical, moral / spiritual and social development of the child; create appropriate institutions to care for / empower orphans and widows; be upright in all our dealings; accept truth and shun untruth including the inhumane / anti-Vedic practices by sects …etc.; advocate the concept of *karmaphala* (one is bound to reap as he sows); consider all living beings as souls and strive for their welfare; encourage use of cow-based fertilisers and products in bio-farming.

The guiding principles of the Arya Samaj is unbendable faith in truth; zero-tolerance for superstitions and allied malpractices, selfishness, superfluous amassing of material wealth and other objects; control of the senses to keep away from unrestrained sensual gratification, i.e. - a constant check on the prime cause of social decline.

The end result would be a world where all would put up every effort to be prosperous and happy, free from disease, work for each other's welfare and wipe out misery.

डॉ० ऋचा शर्मा मोकूनलाल, एम.ए., पी.एच.डी. (संस्कृत),
अध्यापिका डी.ए.वी. कॉलेज

HEAVEN IS ON EARTH

Student : Sir, I have heard much about heaven. Where is it found?

T*eacher :* You have heard that heaven is up in the fourth, seventh or ninth sky where there is the kingdom of God, where judgement is pronounced whether the dead can enter heaven or should go to hell. You may also have heard that the dead can enter the kingdom of heaven through the recommendations of agents, prophets, gurus, Godmen,……etc..

Student : Yes Sir, very true, but is this exact and correct?

Teacher : No! Not at all ! This is only a belief and written in some books. Astronauts have found no physical heaven during their expedition-trips to the moon. Heaven is, in fact, here on earth. It is we who make heaven or hell through our good and bad actions. Our virtuous and sinful actions determine our situation heaven and hell. As per Natural Law, God has given us the freedom of actions. We, humans choose either to enter heaven or hell. The virtuous creates his own heaven and the sinful one creates his hell. Here, God does not give any concession to anyone. Even if you cry bitterly and beg pardon, God never forgives anyone. His eternal law of action is for all human beings." As you sow, so shall you reap". If you plant roses, you get roses, but if you plant thorns, you get thorns.

Student : Sir, people say that heaven is full of gold, light, splendour and glamour. Gods and Goddesses permanently enjoy nectar, wine, cool shade and bathe in swimming pools. Is this true?

Teacher : What the people say, is already available to everyone here without any distinction. The sun, moon and stars give us warmth, light and shade; Air gives life to all living beings; Rivers and clouds give us water to wash and drink; Plants and trees give us food, energy and oxygen; Milk and fruit juice are nectars which nourish and sweeten our life. Here, we have all kinds of treasures : green gold (nature), black gold (petroleum) and yellow gold (metal). Moreover, all beautiful houses, palaces, 5–star hotels, restaurants and entertainment parks are paradise on earth, built by men and women, the gods and goddesses of this earthly kingdom.

Student : Wonderful! I had never thought this way. Thank God who has sent us to this paradise, where we get everything for our joy and celebration, namely -- family, food, education, sleep and shelter. This earthly heaven is far better than the imaginary and bookish heaven meant for the dead. I am alive and I adore this paradise and I wish to come again and again. Thank you very much for such a good and factual explanation.

Dipnarain Beegun

Om ! Agne naya supathā rāye asmānvishwāni deva vayunāni vidwān.
Yuyodhya-smaj-juhurānameno bhuyishthān te nama uktim vidhema.

Yajur Véda 40/16

cont. from pg 1

Au cours d'une sombre nuit si un voyageur arrive à trouver difficilement son chemin ou à s'égarer dans une forêt épaisse, il pourra être aidé en quelque sorte par la phosphorescence de la forêt due aux vers luisants et aux lucioles qui s'y trouvent et qui émettent une certaine luminosité. Il pourra aussi s'en sortir s'il y a des éclairs qui se produisent à ce moment précis.

Pour éclairer notre chemin dans l'obscurité, il nous faut une source de lumière (lampe, flambeau, torche électrique, la lune, entre autres).

En outre il y a le soleil qui resplendit dans notre ciel. C'est le plus grand corps céleste de notre monde matériel. Il ressemble à une énorme boule de feu, unique dans son genre qui éclaire le system solaire. De cette façon, le soleil est étroitement lié à 'Agni' ou au feu resplendissant qui éclaire la voie à tout le monde ou agit comme guide.

En somme tous ces moyens d'éclairage ne sont que les différentes formes de l'Agni' (énergie).

Dans les Védas Dieu est dénommé 'Agni'. Avant tout, sachons que le Rig Véda est mondialement reconnu comme le premier, voire le plus ancien livre de la bibliothèque du monde, et le premier mot de ce livre sacré est 'Agni'.

Nul doute, que, pour la même raison, parmi tant de noms attribués au Seigneur par les sages, 'Agni' soit le premier.

A la création de monde quand Dieu avait transmis les Védas à l'homme, la première priorité des sages aurait bien pu être le besoin d'un guide fiable pour indiquer la voie à suivre et les valeurs ou les attitudes à adopter dans la vie.

Ainsi, à part les enseignements des Védas, ils commencèrent à observer et explorer leur environnement qui pourrait leur venir en aide à ce sujet. Faisons le constat suivant ensemble.

Tout d'abord il y a la nature et toutes ses manifestations (les êtres vivants et toutes les autres choses). Dans le monde matériel -- du moindre brin d'herbe au soleil, le plus grand corps céleste du système solaire, et parmi les animaux -- des créatures, des organismes microscopiques, unicellulaires, la petite fourmi ……. l'éléphant, …. gigantesques, ils ont tous quelque chose à apprendre à l'homme, qui est doté de l'intelligence.

Mais la nature qui est tellement vaste, ne pourra jamais agir comme guide parfait car elle est aussi le berceau, voire le foyer de la divergence, et l'homme va se perdre devant les multitudes d'options discordantes qui vont s'offrir à lui. Il n'arrivera pas à se retrouver dans ses efforts d'identifier la bonne option.

Cependant chaque composante de la nature a ses spécificités et agit selon ses instincts (tendance innée involontaire, impérative commune à tous les êtres vivants appartenant à la même espèce).

Parmi les animaux, c'est la loi du plus fort, communément dit la loi de la jungle où il y a le triomphe du plus fort sur les plus faibles.

Sur la terre, les lions, les tigres et les autres animaux féroces et carnassiers s'attaquent aux plus petits, plus faibles, paisibles et sans défense , et les dévorent.

Dans la mer il y a la coutume des poissons. Les gros mangent les petits.

De cette façon, le monde animalier est dominé par la violence ou l'agressivité et la terreur : *'Survival of the fittest.'*

En conséquence beaucoup de personnes pensent que Dieu et la nature nous exhortent à devenir violent, agressif, intolérant et impitoyable envers nos prochains, pour survivre sur la terre. Pour eux l'agressivité ou la violence n'est qu'une tendance naturelle et incontournable….. La non-violence est inconcevable et n'existe pas dans leur esprit.

Si l'homme adopte le comportement des animaux dans sa vie, il vivra la loi de la jungle. En conséquence la civilisation et les valeurs humaines seraient complètement bouleversées et bafouées.

Certaines personnes osent même penser que les humains appartient à la classe de mammifères parmi les animaux car ils naissent de leur mère déjà formés et se nourrissent du lait maternel.

De telles personnes ne croient pas dans l'institution de mariage. Ils prenaient comme exemple les animaux tels que les bœufs et les vaches, les chevaux et les juments, et les chiens et les chiennes entre autres, où il n'y a pas de relation précise de mari et de femme, à l'exception de quelques espèces d'oiseaux.

Il y a encore des groupes de personnes à travers le monde qui professe que l'institution de mariage est contre la loi de la nature des mammifères.

Pour soutenir notre assertion à ce sujet, nous citons le nom d'un grand savant : 'Platon', le célèbre philosophe grec qui ne croyait pas dans l'institution matrimoniale de l'homme et de la femme comme une norme de la société humaine. Sa logique était basée sur la vie les mammifères.

Dans ce contexte la nature nous apprend beaucoup de choses, mais la connaissance ainsi acquise, n'est ni complète ni parfaite car la nature est inerte (sans vie).

Finalement on arrive tous à la conclusion suivante à ce sujet :

Puisque nous sommes des êtres conscients munis de l'intelligence, il nous faut un guide conscient, parfait et infaillible.

Dans les Védas, un tel guide est dénommé 'Agni' qui veut dire Dieu.

Nous constatons aussi que dans les anciens livres de grammaire sanskrit ou le 'Nirukta', 'Agni' signifie guide ou celui qui illumine notre esprit. Dans certains versets des Védas 'Agni' signifie aussi celui qui détient tout le savoir.

Pourquoi y a-t-il les Védas ?

C'est pour guider les hommes dans la bonne voie de la vie et les unir à Dieu.

Puisque les Védas sont l'unique révélation de Dieu, c'est nul autre que Dieu qui est notre guide suprême, infaillible et digne de notre adoration.

Interprétation/ Anushilan :

O Seigneur ! C'est par ta grâce que provient toute la lumière qui éclaire l'univers ! Nous méditons sur toi, en tant que la lumière spirituelle. Puisses-tu nous guider dans la bonne voie pour l'acquisition des richesses matérielles et de la compétence dans le domaine du savoir et de la spiritualité.

De par ton Omniscience, tu connais tous nos 'Karmas', c'est-à-dire, nos agissements, nos bonnes actions, nos pensées et nos aspirations. D'ailleurs, tu n'es pas seulement au courant des 'Karmas' de notre vie actuelle, mais aussi de toutes nos vies précédentes.

Dès que nous nous engageons sur la mauvaise voie ou que nous ayons de mauvaises pensées, O Seigneur, nous te prions d'intervenir en nous donnant la bonne inspiration pour nous aider à nous ressaisir, à nous raviser, et à éviter des actes irréfléchis ou répréhensibles, en considérant nos prochains comme nous-mêmes, en d'autre mots, comme des êtres qui possèdent chacun une âme comme nous, et qui méritent notre compassion et notre protection.

Que le Seigneur nous inspire à être toujours actifs dans la vie, à jouir de toutes choses matérielles tout en respectant les préceptes de dharma (la vertu, moralité…..), à acquérir, la connaissance du monde matériel et la compétence dans la spiritualité de l'âme par la méditation pour atteindre le but ultime de notre vie : 'Moksha' ou la félicité éternelle.

Tout comme Agni, le feu brule et détruit toutes les ordures ou les immondices pour rendre l'environnement sain, O Dieu, nous te prions de nous débarrasser de toutes nos tendances négatives et ignobles telles que l'agressivité, l'intolérance, le préjudice, l'égoïsme, la convoitise, et l'impulsivité entre autres pour purifier notre âme et notre esprit. Tu es unique au monde et c'est toi-seul qui est digne d'être adoré.

En dernier lieu, tout en exprimant notre profonde reconnaissance envers toi pour tous ces bienfaits, nous nous soumettons à ta volonté. Nous te demandons très humblement de nous accorder le courage et la force morale pour affronter le mal et les difficultés avec succès.

आर्यसमाज क्यों मुझे प्रिय हैं ?

आचार्य विरजानन्द उमा, प्रधान आर्य पुरोहित मण्डल

वस्तुतः श्रेष्ठ पुरुषों के संगठन को आर्यसमाज कहते हैं। 'आर्यसमाज' नाम से महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेद प्रतिपादित मन्तव्यों एवं सिद्धान्तों में विश्वास रखने, उन्हीं का प्रचार करने तथा तदनुसार आचरण करने वाली एक सुसंगठित सार्वभौम संस्था विशेष का बोध होता है – जैसा कि आदर्श हिन्दी संस्कृत कोष में **'महर्षि दयानन्द संस्थापितः समाज विशेषः'** लिखा है।

आर्यसमाज एक विशिष्ट गुण सम्पन्न संस्था है। इसमें कुछ ऐसे विशिष्ट गुण भी हैं जो सामान्यतः अन्य संस्थाओं में नहीं पाये जाते हैं। अपने इन विशिष्ट गुणों के कारण ही आर्यसमाज हमें प्रिय है।

आकर्षक नाम

संसार में प्रायः देखा जाता है कि सुन्दर तथा आकर्षक नाम एवं विशुद्ध कीर्ति लोगों को अपनी ओर खींच लेती है। आर्यसमाज को भी कुछ ऐसा ही सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसके संस्थापक ने इसे ऐसा अनुपम नाम दिया है जो अन्यत्र कहीं भी देखने-सुनने को नहीं मिलता। इसके पीछे महर्षि के महान् त्याग एवं दूरदर्शिता की एक स्पष्ट झांकी दृष्टिगोचर होती है। महर्षि चाहते तो इस संस्था का 'दयानन्द समाज' अथवा 'दयानन्द पंथ' जैसा कोई नाम भी रख सकते थे। परन्तु वह सच्चा संन्यासी लौकेषणा से कोसों दूर था। फिर इसकी घोषणा भी थी कि **'मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझे अभीष्ट है'** *(स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)*। महर्षि जी वैदिक धर्म के पुनरूद्धारक थे अतः वेदों से संगठन का नाम उन्होंने खोज निकाला जो 'आर्यसमाज' के नाम से विख्यात हुआ। **आर्य शब्द उतना ही पुराना है जितना कि वेद।** यह आर्यसमाज नाम दो शब्दों के जोड़ से बना है। आर्यसमाज आर्य शब्द को ही ले लीजिए इसमें सभी मानवीय सद्गुणों का समावेश है। It contains all the human virtues. यह शब्द ऐसा बेजोड़ एवं अनुपम है कि जिसके सम्बन्ध में योगिराज अरविन्द की मान्यता है – "There is no word in human speech that has a nobler history" अर्थात् मानवीय भाषा में अन्य ऐसा कोई भी शब्द नहीं जिसका इतिहास इस शब्द से महान् हो। इतनाही नहीं आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए श्री अरविन्द आगे लिखते हैं – 'आर्य शब्द में एक सामाजिक तथा नैतिक आदर्श का, एक मर्यादित जीवन का, उदारता, नम्रता, सज्जनता, सरलता, साहस, सौजन्य, पवित्रता, मानवता, निर्बलों की सहायता, सामाजिक कर्त्तव्यों का अनुष्ठान, प्राकृतिक ज्ञान की उत्कण्ठा आदि गुणों का बोध होता है।' शब्द कल्पद्रुम तथा अमर कोष आर्य को मान्य, उदार-चित्त, शान्त-चित्त, न्यायपथावलम्बी, प्राकृताचरणशील, सतत्-कर्त्तव्य, कर्मानुष्ठान, महाकुलीन, सभ्य, धर्मशील, शिष्ट, श्रेष्ठ आदि विशेषणों से युक्त व्यक्तित्व वाला कहते हैं । निरूक्त में आर्य को 'ईश्वर पुत्र' कहा गया है । **'वेद व्रतशील को आर्य संज्ञा देते हैं, महर्षि दयानन्द आर्य शब्द की व्याख्या वेद भाष्य में निम्न शब्दों में करते हैं : आर्या : श्रेष्ठ गुण, कर्म स्वभाव युक्ता मनुष्याः अर्थात् जो श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव वाले मनुष्य हैं वे ही आर्य संज्ञा के संज्ञी हैं। वेद में आर्य शब्द गुण वाचक है। यह शब्द देश, काल और सीमा की परिधि से बाहर है।'**

इस प्रकार आर्यसमाज श्रेष्ठ सभ्य धर्मशील शिष्ट, उदार कुलीन व्यक्तियों के समूह अथवा संगठन का नाम हुआ। इससे उत्तम नाम की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। इसीलिए आर्यसमाज मुझे प्रिय हैं।

अमर कीर्ति

लाला लाजपत राय आर्यसमाज को अपनी माता मानते थे। उनका कथन है : **'मेरे जीवन का जो हिस्सा अच्छा और लोगों में प्रशंसा योग्य है, वह सब आर्यसमाज की बदौलत है।..... आर्यसमाज ने मुझे वैदिक धर्म से प्यार करना सिखाया। आर्यसमाज ने प्राचीन आर्यों से मेरा सम्बन्ध जोड़ा और मुझे उनका सेवक बनाया। आर्यसमाज ने मुझे कुर्बानी का मार्ग दिखाया । आर्यसमाज ने मेरे अन्दर सत्य, धर्म और स्वतन्त्रता की रूह फूंकी।** आर्यसमाज ने मुझे संगठन का पाठ पढ़ाया।' और भी लिखते हुए शेरे पंजाब आगे कहते हैं – **'आर्यसमाज के उपकार मेरे ऊपर अनगिनत है और असीम हैं। अगर मेरा बाल-बाल भी आर्यसमाज पर न्योछावर हो जाये तो भी मैं उन उपकारों से उऋण नहीं हो सकता। यदि मैं आर्यसमाज में दाखिला न होता तो ईश्वर ही जाने क्या होता।'**

पं० जवाहरलाल नेहरू जी आर्यसमाज के कार्यो का मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं – 'आर्यसमाज ने इस्लाम धर्म और ईसाई धर्म के प्रभाव को दूर करने में विशेष कार्य किया ।'

प्रधानमन्त्री श्रीमति इंदिरा गांधी का कथन है – **'आर्यसमाज ने भारत के पुनरूद्धार के लिए ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। समाज में अन्धविश्वास दूर करने और विशेषकर शिक्षा के प्रसार में बहुमूल्य योगदान रहा है ।'**

अटल बिहारी वाजपेयी अपने सन्देश में लिखते हैं – **'राष्ट्रीय पुनर्जागरण के महान् कार्य में आर्यसमाज का योगदान आधुनिक इतिहास में स्वर्ण-अक्षरों में अंकित रहेगा।'**

अतः अनेक धार्मिक विद्वान् एवं ऐतिहासिक पुरुषों ने आर्यसमाज को श्रेष्ठ माने और अपनाने की चेष्टा कीं।

आर्यसमाज हमेशा के लिए श्रेष्ठ रहेगा और उनके गुणों का अनुकरण, अनुसरण एवं पालन करना है। अतः आर्य समाज सभी सेवकों के लिए श्रेष्ठ होना है।

उद्देश्य

महान् संस्थाओं के उद्देश्य भी सदा महान् ही हुआ करते हैं । या यूँ कहिये कि महान् उद्देश्य वाली संस्थाएँ ही महान् हुआ करती है। आर्यसमाज की स्थापना भी महान् तथा व्यापक उद्देश्य को लेकर की गई है और इसी कारण यह संस्था लोकप्रिय हो रही है। आर्यसमाज के उद्देश्य उसके शाश्वत नियमों में निहित है। आर्यसमाज का क्षेत्र अति व्यापक है और इसका लक्ष्य किसी जाति अथवा देश तक ही सीमित नहीं है। आर्यसमाज के छठे नियम के अनुसार संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इस नियम में मानव ही नहीं प्राणीमात्र के उपकार की बात कही गई है। इस नियम में सम्पूर्ण विश्व के उपकार के लिए विचार किया गया है । आर्यसमाज की उद्देश्य-सिद्धि एकांगी नहीं अतः विस्तृत है। आर्यों को तो सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए सर्वदा उद्दत रहता है। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना; सब सत्य विद्याओं का पुस्तक ईश्वरीय ज्ञान वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना; सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य; व्यवहार करना; अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना; एक सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वशक्तिकान, न्यायकारी दयालु, अजन्म, अनन्त, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सवैश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तयामी अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि-कर्ता ईश्वर में विश्वास करना एवं उन्हीं को उपास्य मानना; आर्यों का परम धर्म है। ऐसे उत्तम उद्देश्यों वाली संस्था भली किस बुद्धिमान् सत्यप्रिय को प्रिय न होगी।

मूलाधार

सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री अपने लेख में लिखते हैं – 'मानव शरीर के प्रत्येक ऐच्छिक कार्य-कलाप का आधार जैसे कोई मानसिक प्रक्रिया होती है, उसी प्रकार संसार के प्रत्येक सामाजिक संगठन का भी कोई दार्शनिक आधार होता है। और उसको पूर्णता के अनुपात से ही कार्य-कारण-सरणि द्वारा कार्य की पूर्ति होती है। उदाहरणार्थ संसार के प्रत्येक मत और सम्पद्राय, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, कम्युनिस्ट आदि के दार्शनिक आधार-पुराण, कुरान, बाईबिल, दास कापिटल आदि ग्रन्थ है। उनके गुण-दोषों के अनुसार ही उनके अनुयायी भी होते हैं। आर्यसमाज का मूलाधार वेद है जो संसार के प्राचीनतम गन्थ उसी को आधार मानकर आर्यसमाज की स्थापना की गई है।

ईश्वरीय ज्ञान वेद चूंकि सृष्टि नियम के अनुकूल तथा पूर्णतः विज्ञान सम्मत है अतः वैदिक धर्म भी जिसका आर्यसमाज प्रचार करता है सर्वथा वैज्ञानिक धर्म है। विज्ञान का इस धर्म के साथ कही भी विरोध नहीं। मिस्टर ब्राऊन वैदिक धर्म की श्रेष्ठता दर्शाते हुए लिखते हैं –

It is a thoroughly scientific religion where science and religion meet hand to hand. Here theology is based upon Science and Philosophy.

अर्थात् यह एक पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है जहाँ धर्म और विज्ञान हाथ में हाथ मिलाकर चलते है। यहाँ धार्मिक सिद्धान्त विज्ञान और दर्शन पर आधारित हैं।

आर्यसमाज हमें इसलिए भी प्रिय है कि यह एक पूर्णतः तर्क संगत वैज्ञानिक धर्म को मानता है। सत्य तो यह है कि आज के वैज्ञानिक युग में कोई धर्म, जो विज्ञान सम्मत न हो, टिक ही नहीं सकता। डा० राधाकृष्णन की भी ऐसी ही मान्यता है – No religion can hope to survive, if it does not satisfy the scientific temper of our age. अर्थात् कोई भी धर्म जीवित रहने की आशा नहीं कर सकता कि जो वर्त्तमान युग के वैज्ञानिक रूझान को सन्तुष्ट न कर सके।

अतः हमारा भी लक्ष्य होना चाहिए कि आर्यसमाज का कार्य पूरा करें और संसार का उपकार करें।

The Foundation of the Arya Samaj and the Teaching of Vedas by Swami Dayanand Saraswati

In 1875, Swami Dayanand Saraswati, a man of vision, founded the Arya Samaj. His mission was to reform Hinduism and the society to establish universal brotherhood. His clarion call was 'Back to the Vedas'.

The Vedas are divine, universal, rational and practical. They are the sources of eternal inspiration, as they are God's words received by four great ancient 'Rishis' when God created mankind in the universe. The Indian society was engulfed in the darkness of ignorance and superstitions. Swami Dayanand created an awareness and the outcome was the transition from darkness to light of knowledge. The Vedas are known as the true knowledge of God. They are referred as the source of all true knowledge.

Swami Dayanand established the ten principles for the physical, spiritual, social development of all human beings. The foundation of the Arya Samaj sensitised people on Women's Rights which brought about gender-equality, justice, honour, dignity and the right of self-determination. The Vedas do not advocate any sort of gender-bias.

The Vedas emphasize on education for all. Everyone must have access to knowledge and develop wisdom. The message of Swami Dayanand and the Arya Samaj to the whole world was based on the Vedas. Swamiji was not only a great scholar of Vedas but a nation builder as well.

Swami Dayanand encouraged people to practice the teachings of Vedas. He advocated that only God is worthy of worship. The second principle of the Arya Samaj describes the attributes of God, in particular His Omniscience and Omnipresence.

He further added that we should be ever ready to accept truth and give up untruth, to promote 'vidyā' (knowledge) and dispel 'avidyā' (ignorance). Most of all one should not be content with one's own welfare alone, but should look for one's welfare in the welfare of all.

Dr. S. Radhakrishnan, former President of India qualified Swami Dayanand as a 'great soul'. He also stated that among the makers of modern India, the highest place would be assigned to Swami Dayanand.

Swamiji strived to emancipate India in the religious, political, social and cultural fields at a time when there was total confusion on religious matters, social malpractices and superstitions widespread. Swami Dayanand stood as a saviour, giving freedom of conscience to all.

May we all join our efforts with the Arya Sabha Mauritius, the Arya Zila Parishads, the Arya Samajs, Mahila Samajs, Yuvak and Yuvati Sanghs throughout the island to continue the work of Swami Dayanand.

Mrs Yalini Rughoo-Yallappa,
B. A., P.G.C.E Delhi University

कर्म कुरु ।

दुष्ट कर्मों को छोड़ धर्म किया कर ।
अत्यन्तं स्नानं भोजनं निद्रां जागरणं
निन्दां लोभमोहभयशोकान् वर्जय ।
अति स्नान, अति भोजन, अधिक निद्रा,
अधिक जागरण, निन्दा, लोभ, मोह,
भय, शोक का ग्रहण कभी मत कर ।।

ARYA SAMAJ - AFRICA CHAPTER : A new initiative

Report on the visit to South Africa for the setting up of an Africa Chapter and the 90th anniversary of the Arya Pratinidhi Sabha of South Africa

One of the resolutions adopted at the 2012 and 2013 World Arya Samaj Conferences in New Delhi and Durban, was to create a common platform for the Arya Samaj movement in Africa called 'Africa Chapter'. Such a network would be a platform for the sharing of resources to disseminate the universal Vedic values across the African continent.

Pursuant to the above resolution, Dr. B. Rambilas, the President of the Arya Pratinidhi Sabha of South Africa (APSSA), convened a meeting of delegates from the head organizations of the Arya Samaj Movement in Africa countries to attend to a working session on the institutional structure, the modus operandi and the launching of the Arya Samaj Africa (ASA) as well as the celebrations of the 90th anniversary of APSSA (12-14 February 2016). The program included a visit to

the various institutions run by APSSA and the former residence of Mahatma Gandhi, now restored as a Museum. The partici-

pants also had a glimpse of the training of priests and daily yajna was performed by school children.

The following delegates attended the meeting of Saturday 13 February 2016 at the seat of APSAA in Durban :

- Bisram Rambilas, Shri Balwant, Pta Roshilla Benymandhub from *APSSA*, *Durban*;
- Prof. Soodursun Jugessur, Shri Ravindrasingh Gowd, Smt. Poonum Sookhun-Teeluckdharry Shri Vikash Teeluckdhary, and Shri Oograssen Devpal Cowreea from *Arya Sabha Mauritius*;
- Shri Anil Kapila, Pt. Francis Mwangi Shastri from *Nairobi Arya Samaj*;
- Shri Rajni Tailor and Smt. Tailor from *Uganda*;
- Shri Vinay Arya from *Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, New Delhi;* and
- Acharya Vachonidhi from *Kutch, Gujarat.*

Aims of the Africa Chapter

➢ To determine the countries that would constitute such a chapter and suggestions were South Africa, Tanzania, Malawi, Uganda, Mauritius and India.

➢ To devise a networking system to facilitate communication using Information Communication Technology and social media - Skype …etc.

➢ To determine the resources that each member country would be willing to share to help one another.

➢ To decide whether the Arya Samajs in these countries could be used to establish, strengthen political, business and other strategic partnerships for mutual benefit.

➢ To explore cultural and religious links with the native African communities, i.e. sharing of common world views, respect for nature (flora and fauna), family and cultural values.

➢ To focus on the dissemination of the philosophy of the Arya Samaj among these countries- create closer bonds by arranging exchange programs, conferences … etc.

Initial Action Plan

➢ To agree, as participating countries, that such an African Chapter is necessary.

➢ To agree on making a commitment to such a chapter as outlined in the aims.

➢ To initiate the inaugural meetings-decide on a country that would be most suitable to host these meetings while considering travel costs and exchange rates.

➢ To decide on delegates that will attend and how they will be funded.

➢ To draw up a charter that can be used as a working document.

However, upon the advice of Justice Patel, an Africa Charter will have legal implications such as country's jurisdiction…, which may hamper the proper running of the organization at present. All Delegates unanimously approved the proposal of Dr. Rambilas to enter into a Memorandum of Understanding (MOU) to start the work and thereafter come with a Charter after thorough examination.

Objects of the MOU

- To facilitate interaction, collaboration and communication.
- To share Knowledge resources and expertise.
- To share resources (financial, human and otherwise), literature, publications.
- To create and optimize networking.

Resolutions

APSAA will send the corrected version of the approved Memorandum of Understanding (MOU) as draft copy to all participating countries for perusal before finalization. Clause 7 of the original draft was amended to replace the words 'conflict resolution' by Good Governance. Consequently the two sub paragraphs were also deleted.

Membership

The delegates present agreed that the following countries would be the initial members of Arya Samaj Africa (ASA): India, South Africa, Mauritius, Kenya, Uganda, Malawi, Tanzania which includes Zanzibar. Only duly constituted and established Arya Samaj organizations will be eligible for membership.

Steering Committee

The Delegates agreed to establish a Steering Committee to facilitate the implementation of the MOU and progress. The East Africa group showed reluctance in the adoption as they had no mandate to endorse any decision whereas the Maurit-

ian delegation was duly mandated to take appropriate stands as may be deemed fit.

The composition, powers and functions, terms of office, meeting and other logistical arrangements shall be provided in a separate 'Terms of Reference' document which will be formulated and agreed by all the signatories of the MOU. Such document shall support a system of rotational presidency.

It was agreed that the following members will be the members of the Steering Committee: Prof. Soodursun Jugessur, Shri Ravindrasingh Gowd, Dr. Bisram Rambilass, Shri. Jai Balwant, Pta Roshila Bhenimadho, Shri Anil Kapila, Pt. Francis Mwangi Shastri, Shri Rajni Tailor.

Secretariat

Prof. Soodursun Jugessur informed the Committee that Mauritius is agreeable to host the Secretariat of the ASA and shall provide all secretarial functions for the Steering Committee.

Launching

The Arya Samaj Africa was launched on Sunday 14 February 2016.

Fund raising for community projects

The Arya Samaj South Africa launched "Tripti", a project to provide several bore holes to supply drinking water to the poor areas of the community. Delegates from different countries, local people, Shri Vinay Arya from the Sarvadeshik Pracharini Sabha contributed to this initiative. Prof. Jugessur, as Head of the Mauritian delegation committed the sum of Rand 20,000 on behalf of Arya Sabha Mauritius.

Ravindrasingh Gowd

The Sharp Rationalism of Maharshi Dayanand Saraswati

Sookraj Bissessur, B.A.,Hons.

"Dayanand Saraswati was the most vigorous force of the immediate and present action in India at the moment of the birth and re-awakening of the national conscience. He was one of the most ardent prophets of reconstruction of nationalism and it was he, who kept the wide and discerning vigil." ***C.F. Andrews***

Born in Tankara in the Morvi district in Gujarat Moolshankar grew to become Swami Dayanand Saraswati, the founder of the Arya Samaj. He refused to be first President of the Arya Samaj as requested by its members. He did not name anybody to be his successor, nor granted any prestige or privilege to anyone. Every member has to comply with the rules and regulations with sincerity of purpose and devotion.

The Advent of British Rule

India was entirely torn up by intestinal quarrels and conflicts between 'Rajas' and 'Maharajah's', which led to the supremacy of foreigners over Indians. Another great drawback of the Indians was that they had always been and are still glued to their irrational old methods, customs and traditions whereas the British had surprised them by their achievements in science and technology.

India – the Guiding Star

The implantation of railways improved communication, and the abundant supply of finished goods from the British factories dumbfounded the poor Indians, who looked upon the Britishers as super human beings and benefactors. But, India which had been the cynosure or Guiding Star of the East was losing its importance. That great and vast country was deprived of its opulence and riches and became an impoverished state.

Indian Youth and British Education

The Indian Youth, after acquiring certain level of British education, associated himself with the western cultural habits, considered themselves to be civilized and severed connection with their family who were submerged in ignorance and superstitions.

Many of them had fallen easy prey to the Christian missionaries who were proselytizing Indians to Christianity. Eminent persons like Raja Ram Mohun Roy, Keshab Chandra Sen, and others fell for the Western Culture adhered to that way of life.

Back to the Vedas

The great clarion call, "Back to the Vedas" sounded by Maharshi Dayanand Saraswati had disturbed the sweet slumber and dream of these Anglo-Indians and the British who were bent on deceiving the Indian Youth. It had also shaken the superstitious ridden Hindus paving the way to immense social reform.

After reaching Calcutta, Swami Dayanand was immensely astonished with the progress achieved by the Brahmo Samaj. Swamiji had also noted that most intellectuals of that city had adhered to that Samaj. At first sight he felt that the Brahmo Samaj had surpassed his reform movement. But when it came to his notice that the supporters of the Brahmo Samaj had sound connection with the Christian religion, he just kept aloof from them.

In a brief span of time, Maharshi Dayanand Saraswati had achieved immense fame. He was also was prolific writer with commentaries on the Rig Veda and Yajur Veda. Dayanand's strong opposition to orthodoxy in religion turned him into a ruthless critic of all those who, he considered, had polluted the Vedic concepts. Dayanand had also performed an up-hill task for social reconstruction and raised the status of untouchables on the sound principles of equality.

cont. on pg 7

Arya & Arya Samāj

The word Arya is …more-than-often… misunderstood and given a narrow meaning - a religion, race, society, creed, community …etc.

Arya: the highest meaning

Arya transcends the geographical and other man-made barriers. A lustrous sparkling diamond from a mine is but rough stone which has undergone attentive cutting and polishing processes. Likewise an Arya is someone whose personality has been trimmed down by the tenets of Dharma (virtue). Someone enrolled in the register of members of an Arya Samāj may call himself an Arya only when he abides himself to its principles.

Arya is no new word

Various mantras of the Vedas refer to Arya as a person who is noble in thoughts, speech and actions *(sakala shubh, uttama, dhārmik guna-karma-swabhāva, vidyā dharmādi utkrishta swabhāva ācharana yukta jana)*. Arya is also depicted as *dwija*, someone who has been living up to the ideals of the sacred thread (*yajnopavita*) a reminder of our duties and responsibilities towards (i) our living mother-father (*matā-pitā*), (ii) preceptor (*āchārya-guru*) and (iii) God, more specifically be true to ourselves and to others.

When requested to found an organisation to continue the reform movement, Maharishi Dayanand Saraswati came forward with the name of Arya Samaj; ***the word Arya being as old as the Vedas.***

Arya: thoughts, words and deeds are in harmony at all times

Of all living beings, the human birth is of the highest order, indeed an exceptional opportunity. The soul residing in the human garb is empowered to purge itself of previous samskāras (imprints) and attain the goals of human life… *dharma, artha, kāma & moksha*. Humanity, more so Arya implies truth, justice, righteousness at the levels of our thoughts, speech and actions :

Manasyekama vachasyekama, karmanyekama mahātmanām I
Manasyanyata vachasyanyata, karmanyanyata durātmanāma II

Perfect harmony between thoughts, words and deeds are the qualities of the noble; any divergence is the make-ups of the wicked. Unity of thoughts, words, and deeds leads to purity and purity leads to spirituality.

Dusron ke guna aur apne galtiyan ko dekhā karein…

An Arya always looks for good qualities in others and through introspection he is ever on the lookout searching for his own flaws. He views criticism positively, thus empowers himself to purge his flaws.

Birds are categorised, those singing sweetly (cuckoos …etc.) are likened as they impart cheerfulness and those cawing (crow …etc.) are just driven away. Likewise our character, actions and make-up or moral fibre *(guna, kārma & swabhāva)* will yield the treatment that we deserve.

Arya : the personification of all the noble, virtuous and humane qualities adorning human character.

Nirukta 6.26 refers to Arya as *Ishvara putra* (son of God.) Just like a son inherits the genealogy from his parents the soul is considered as such when it lives up to the ideals of *manurbhava*, i.e. it radiates with the attributes of humanness.

The Vedas spell out that Arya (nobility) is solely based on *guna, karma & swabhāva*, or *āhāra, vichār & vyavahār*, never by inheritance or pedigree.

RV 1.51.8: Friendship with Aryas, i.e. noble people enables us to acquire their good qualities and behavioural norms progressing towards perfection. In the absence of role-models it is difficult to gauge the benefits of 'be good - do good' and to shun bad conduct.

In Aryābhivinaye 1.14, Maharishi Dayanand expands on this same hymn whereby he refers to Arya as one who is fully ethical, from head-to-toe, i.e. having sound education, upbringing, behaviour and moral fibre.

RV 9.63.5 **'Indram vardhanto apturah krinvanto vishwamāryam | Apaghnanto arāvnah ||'** is a prayer where we seek the blessings of the Almighty to be fearless, energetic in dealing with (i) devious, immoral, corrupt …unethical behaviour, and (ii) the barriers to enlightenment, namely- ignorance and the ancillary negative emotions such as anxiety, fear, anger, jealousy, desire, depression …etc. (*avidyā… raga, dvesha…*). Only when evil is thrown away that goodness can settle and the whole world will become Arya, i.e. - noble.

Arya : definitions by others

Arya in Buddhism denotes a scholarly person who dwells in dharma (virtue). Jainism refers to the *sādhavi* or lady who has become an ascetic, renouncing to worldly pleasures as Aryā. The Sikh religion indicates that Arya means a noble, valorous and virtuous person who sacrifices himself for the cause of dharma.

In the Valmiki Rāmāyana, Shri Rāma is called Aryaputra because of his noble qualities and Sitā as Aryā, i.e. virtuous lady. In the Adi Parva (44.7) of the Mahābhārata a prince is called Aryamati because of his ennobled intellect.

Shri Aurobindo writes : *"An Arya is a particular ethical and social ideal, an ideal of well governed life, candour, courtesy, nobility, straight dealing, courage, gentleness, purity, humanity, compassion, protection of the weak, liberality, observance of social duty, eagerness for knowledge, social accomplishment, there is no word in human speech that has a nobler history."*

Arya Samāj

Arya Samāj is the (*Samāj*) assembly of (*Aryas*) virtuous, noble people who can unitedly think and strive to create a better society, in short to raise people from the status of social animals to that of human beings. Founded by Swami Dayanand Saraswati, the Arya Samāj became the guiding light to people who were lost in total darkness.

Swami Dayanand Saraswati as a lifeline

The political, economic and social conditions prevailing in the nineteenth century presented to a dismal picture of a society: Illiteracy …prevailed; ignorance … abounded; superstitions …rampant; knowledge …totally eclipsed; the essence of dharma …lost; practice of irrational rituals and blind faith …dominant; social evils …widespread; cultural values …eroded; centuries of foreign domination …reduced the glory and valour of Aryavarta to shambles.

Maharishi Swami Dayanand Saraswati came forward as a lifeline for the disintegrated and factional ridden society which was on the brink of annihilation.

The ten principles of the Arya Samaj

In a nut shell, the 1st and 2nd principles pertain to the duty of man towards God; the 3rd, 4th and 5th focus upon the duty of man towards himself; and the 6th to 10th point out the duty of man as a social being. None of these principles incline towards communalism. They are eternal with universal appeal and acceptability.

Dharma sharpens the discriminative power of one's intellect: to differentiate between right and wrong, proper and improper, good and bad, virtue and evil, duties/ responsibilities and carelessness.

Good begets good and evil begets evil

Yat manasā dhyāyati, tadvāchā vadati
Yatvāchā vadati, tatkarmanā karoti
Yat karmanā karoti tadābhi sampādhyate'

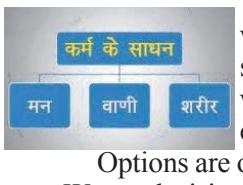

As we think, so we speak; as we speak, so we act; as we act, so we become.

Options are open and the choice is ours. Wrong decisions = lost in wilderness, disaster; Right decisions = success. The weighing scale is truth; Truth is substantive *(satyameva jayate nānritām)*.

Social betterment

Maharishi Dayanand Saraswati has handed over the ten principles of the Ārya Sāmaj as a roadmap to success for the physical, moral / spiritual and social uplift of all. Social betterment encompasses progress in all spheres of life: social, economic and political.

Our universe has sufficient resources to fulfil the needs of all NOT the greed of a few!

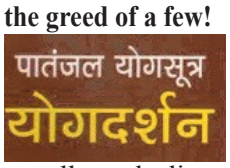

Ethics throughout all our dealings will ensure social progress: a society free from unlimited desire. It is the endeavour and aim of Arya Samāj to help in creating such a society. Sage Manu's ten tenets of Dharma and Sage Patanjali's Yama – Niyama form a universal code of ethics that should be integrated in teaching curriculum at all levels.

Success of Arya Samāj

The benchmark to measure the success rate in achieving its objectives is the sum total of our individual efforts to live up to the Vedic ideals, summed up in the 10 principles of the Arya Samāj. Pointing fingers at others result in three fingers pointing towards our own self. Let us all align our thoughts, speech and deeds in line with the Vedic edicts… the world will be transformed by the transformation of each and every single unit… the smallest component… the individual. *Pehle ham sudhrein… samāj aur jag apne āp sudhar jayeinge.*

(.....to be continued)

Yogi Bramdeo Mokoonlall
Darshanācharya
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya)
Arya Sabha Mauritius

cont. from pg 6

An ardent votary of truth, Dayanand was also a brave, strong and independent fighter. As a sincere patriot he is reckoned as the greatest architect of modern India. Through the Arya Samaj which he founded, he had enormously contributed to the spirit of nationalism by making it fuller in content, indigenous in approach, wider in scope and noble in ideals.

The Arya Samaj, as per Dayanand's vision, is an innovating society, rational, moral, ethical, spiritual, materially prosperous and ecologically sustainable. Today, Arya Samaj's movement is playing a pioneering role in spreading the Vedic heritage not only in India but also in all parts of the world.

Maharishi Dayanand's deep penetrating and sharp discerning farsightedness and spiritual planning had pierced the entire veil that had blurred the vision of his compatriots.

Celebrating the Arya Samaj Sthapna Divas

Time to innovate to achieve better results

Celebrations are also moments for deep reflection and time to initiate social change. In this fast moving modern world, change is unavoidable. We need to proceed in a very systematic way to achieve the desired goals. Continuously doing things in the same way will yield the same results, hence the need for some strategic planning of our activities to arouse interest among youth who represent the generation of future leaders.

Lot of good works are being done *'ni tambour ni trompettes'*, i.e. without any publicity through our different Arya Samaj branches scattered all over the island. The number of congregational meetings (Yajna & satsanghs) held at one-go in the various Arya Samaj Mandirs on Sunday mornings are beyond our imagination. Yajna is scientifically proven to be beneficial for a healthy environment. It rightly fits in the national and international agenda in promoting a sustainable environment. Our weekly socio-cultural meetings and the evening schools have been, are and will always be a medium to impart citizenship education to the public at large with focus on the universal human values essential for the development of man into human being *(manurbhava)*.

Though tremendous work is being carried out to uplift the social, physical, moral and spiritual standards of all, yet we complain that there is lack of interest among youngsters. They have to be brought to the satsanghs since early childhood. Our approach must be subtle, consistent and efforts regular and over a long period of time.

Nowadays we are facing difficulties to attain the critical required number of students in our evening schools. Most of them are run three or five days per week with very low attendance since most of the students prioritize on private tuition in other subjects. We may optimize on using our time and energy in strategies to successfully attain our objectives. It would be more efficient and effective to run the Hindi classes on Sundays. Some Samajs are practicing same since quite some time with praiseworthy results.

Classes start at 8.00 or 8.30 a.m. with Yajna, bhajans, satsangh integrated in the program where all the students have an active participation as yajmaan, the chanting of bhajans, poem / shloka recitation and short speeches. The formal Hindi classes should start at 09.00 or 9.30 a.m. and end at 12.00 or 12.30 hrs. By so doing, the number of participants in the weekly Satsanghs increases and new members join the Samajs as most parents tend to accompany their child to encourage them, thus develop an ardent desire to also participate in these activities.

It is humbly suggested that all Presidents, Secretaries and Office bearers of the Arya Samaj branches give a thought to the above suggestions and implement same. Time will speak for itself with positive results. This is neither daydreaming nor illusion. It is an experience which the Pailles Arya Samaj has successfully implemented and is working marvelously.

Raj Sobrun, BA (Counselling), MSc (Social Development), Arya Sabha Mauritius

ARYA SAMAJ : l'héritage du Maharishi Dayanand Saraswati

Arya Samaj: définition

L'Arya Samaj *(Arya + Samaj)* est l'association (samaj) des gens nobles (Aryas.) La noblesse, selon le Véda, n'est pas héréditaire; elle est attribuée à une personne dont le caractère (*Guna*), les actions (*Karma*) et le tempérament (*Swabhava*) sont magnanimes,

Le citoyen planétaire

Le train de vie et les valeurs qu'on retrouve dans les pensées (*mana*), ses paroles (vachana) et ses pratiques (*karma*) d'un Arya fait de lui un cosmopolite *(kosmos + polités)*, c'est-à-dire un citoyen universel.

L'universalité des principes

L'Arya Samaj prône une vision où tous les humains deviennent des gens nobles *(Krinvanto viswamāryam)*. Le concept du monde comme un 'global village' découle des enseignements védiques : *(Vasudaiva kutumbakam)*.

Le but principal de l'Arya Samaj est d'œuvrer pour le bien-être du monde, c'est à dire – améliorer la condition physique, mentale / morale / spirituelle et sociale de tous.

L'origine du mot Arya

Le mot Arya a attiré l'attention du fondateur de l'Arya Samaj, Maharishi Swami Dayanand Saraswati, au cours de ses recherches dans le Véda. Aussi les premières personnes sur terre étaient des *Aryas* - une ère où les gens étaient nobles dans leurs pensées, paroles et pratiques.

Le Véda : the one-and-only revelation

Fondée en 1875, l'Arya Samaj propage les préceptes du Véda qui constitue le Sat Sanatan *Vedic Dharma*, la plus ancienne '*code* of *conduct*' de l'humanité et *« the one-and-only revelation »* à l'homme à la création du monde, 1, 960, 853, 116 ans de cela (= l'an 2016 selon le calendrier grégorien).

Les recherches scientifiques à propos de l'âge de l'Univers se rapprochent de plus en plus à cette date. Le RigVéda est reconnu comme le plus ancien texte du monde. La tradition du chant védique a été inscrite sur la liste du patrimoine culturel immatériel de l'humanité de l'UNESCO en 2008.

Les textes védiques sont simplement la retranscription phonétique des connaissances transmises à l'homme par dieu. Par contre les textes des autres croyances relatent les faits et gestes d'un prophète et sont écrits de la main de l'homme.

Un érudit déclarait : « on n'a pas commencé à écrire les textes parce que la tradition de commençait à se perdre, mais la tradition Shruti ou transmission orale des connaissances védiques a commencé à se perdre quand on a commencé à écrire les textes ». Le Véda, comme la conscience, est sa propre preuve (swatah pramāna).

Concept de dieu

L'Arya Samaj prône le monothéisme selon le Véda : un seul dieu. Omniprésent, il est présent partout à tout moment ; Omniscient, il sait tout ce qui se passe au sein de l'univers au moment où ces actions se déroulent …etc.

AUM (OM) est le nom suprême qui exprime aussi tous les autres noms. Chacun des autres noms représente qu'un seul caractère ou action de dieu. S'agriper qu'à un seul attribut est synonyme de ces malvoyants qui décrivent un éléphant comme le tronc d'un arbre, une feuille du bananier, une corde, un buffle sur un piédestal, selon ce que la personne a pu percevoir – une patte, l'oreille, la queue …

Swami Dayanand a décrié le concept des avatars : une incarnation de dieu limiterait sa présence en un corps et ainsi met fin à son omniprésence et son omniscience. Le Véda stipule que personne ne doit le vénérer en tant qu'*avatar* : ...na tasya pratimā asti…(YV32.03), **sa paryagā-chukram-akāyam-avranam-asnāviram…** (YV40.08).

Les Aryas ne pratiquent pas la religion de façon étroite ou inintelligente car l'enseignement védique regorgent des connaissances mondaines (sciences, arts, musique, etc.) et spirituelles.

L'universalités des initiatives de l'Arya Samaj

Les interventions sur le plan social ont permis à innombrables personnes d'avoir accès à l'éducation – un grand pas vers l'émancipation des enfants et des dames. Cela a permis de créer une société meilleure où personne n'est délaissée, tous respecte les droits d'autrui tout en s'attelant à ses obligations, …etc. Ces œuvres transcendent les barrières, les unes plus illusoires que les autres - géographique, couleur, race, linguistique, entre autres.

Les principes de l'Arya Samaj révèlent le dynamisme d'une institution dont les valeurs universelles, inspirées du Véda, qui servent aussi de base pour la charte des Nations Unis et autres conventions internationales.

Les Védas : la source des codes de conduite

Les Védas contiennent aussi des exhortations pressantes, reproduites dans les codes de conduite de l'être humain. L'homme doit prêcher d'exemple où nos karmas (actions) doivent être des actes qui feront de nous des gens nobles et qu'elles soient imitées.

Un Arya doit être bienveillant où il s'assujettit au bien-être commun quand ses intérêts croisent les fers avec les intérêts de la société. Ainsi il n'y aura plus l'exploitation de l'homme par ses pairs. La globalisation ou le concept de *'Krinvanto viswamaryam'* ne se limitera pas à la chose commerciale et monétaire.

Les dix principes de l'Arya Samaj

Maharishi Dayanand Saraswati les a énoncés comme un résumé des enseignements védiques qui servent de boussole à l'homme en cour de route. Nos devoirs de révérence envers le créateur sont décrits dans le 1er et 2ème principe. Le domaine de la personne envers soi-même est élaboré dans les trois prochains principes. Du 6ème au 10ème, les principes révèlent les devoirs de l'homme en tant qu'être humain.

Nous devrons explorer les bases de ces règles qui sont détaillés dans le *Samskāra Vidhi* (les sacres), le *Rigvedādi Bhāshya Bhumikā* (initiation à l'interprétation du Véda), le *Satyārtha Prakāsh* (discernement de la lumière sur la vérité) et autres écritures de l'éminent sage. Ses écritures consistent l'élaboration des connaissance *Védiques, Brahmana Granthas, Upanishads,* et les œuvres d'autres sages (*rishis*) du temps de *Brahmā* jusqu'à *Jaimini*.

La transparence : un concept Védique

Un Arya prône la transparence. Sa vie ressemble à un *'open book'*. Il sait différencier la vérité (*satya*) du mensonge (*asatya*). Il étudie le Védas et incite les autres à faire de même. Les enseignements védiques sont simplifiés dans un dicton : 'qu'on ait le courage de se regarder dans un miroir !' L'introspection continue est une activité incontournable.

On se doit de vérifier les données et réfléchir sur tous les aspects des choses qui sont censés d'être des pommes de discorde. Et ces différends ne doivent pas ériger entre les hommes des murs plus grands que le Grand Mur de Chine ! Les critiques / l'autocritique (*khandan*) et l'appréciation (*mandan*) sont deux armes affûtées qui vont de pair, comme les deux rails du chemin de fer. Si un rail brisé est délaissé, on doit s'attendre à des catastrophes.

La bonne gouvernance

Les sages ont codifié les connaissances Védiques depuis des millénaires dont nous énumérons certains textes : (i) *Manusmriti* (code de conduite) ; (ii) *Kautilya Artha Shāstra* (économie) ; (iii) *Chānakya Niti* (politique) ; (iv) *AyurVeda* (science médicale) ; (v) *DhanurVeda (*science de la défense) …etc.

Faute de temps l'homme n'arrive pas à maîtriser ces connaissances. Mais à chaque point de mire, il nous faut chercher les modes de conduite énumérées dans les *écritures saintes*. La base demeure le *Satyārtha Prakāsh* et le *Samskār Vidhi*. Ce dernier titre est l'art fondamental à faires de nos enfants de bons citoyens de cet univers.

Il nous faut les lire et relire avec un objectif précis : découvrir les lignées de la bonne gouvernance surtout parmi les sections où Maharishi Dayanand Saraswati décrit nos devoirs et responsabilités. Les chapitres V, VI et VII du *Satyartha Prakash* sont en harmonie avec le *Samskāra Vidhi* et vice-versa.

Dans ses mémoires, Mr. Ramdhun Poorun, ancien dirigeant de l'Arya Sabha nous guide vers l'introspection : *'Le Vedic Dharma est le cheval, l'Arya Samaj est la calèche, le Swami Dayanand est l'éclaireur de nos routes, nous sommes les passagers.' Il ajouta à la fin de ce même livret : 'le navire du Maharishi Dayanand est l'Arya Samaj ; la philosophie Védique sert de boussole ; il faut suivre les enseignements du Maharishi ; propager les enseignements du Véda ; les citoyens de ce monde agiront avec sagacité; on doit se fier en la parole d'autrui que si elle reflète la vérité, même si c'est une armée de gens qui vous les disent ; faites confiance qu'à ce qui résiste aux intempéries.'*

La rédaction, Aryodaye

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचाय*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Arya : a word as old as the Vedas

The Vedas spell out an Arya is someone with noble thoughts, speech and deeds.

RV 1.59.2 : An Arya leads life with noble thoughts (*vichār*) and behaviours (*vyavahār*) because the Almighty has imparted the life skills and values in the Vedas 'the source of all true knowledge', indeed a manual for living as a human being NOT a social animal. As such Aryas should worship only Him.

RV 1.103.3 : An Arya is the best among the noble who consolidates the physical and moral / spiritual ideals and brings joy to the community.

RV 1.117.21 : Those responsible for law and order should provide all necessary support to protect (i) farmers to ensure food security, and (ii) spiritual leaders and educators involved in the dissemination of true knowledge towards the building of an ethical society. The three classes of people should first and foremost be Aryas, i.e. - righteous, learned and more importantly they should practice-what-they-preach.

RV 1.156.5 : An Arya is one who has acquired sound worldly, moral and spiritual education as well as imparts and applies such knowledge to improve overall welfare.

RV 2.11.19 : Aryas are those who uphold their integrity, are ethical in applying the highest knowledge to attain mental, verbal and physical happiness, and promote the physical, moral and social development of the community.

RV 3.34.9 : An Arya has a sun-like radiating personality. He possesses a discriminative faculty to sieve truth from untruth, good from bad, to act with fairness be ever impartial and unmoved by prejudice. He becomes a role model and others by emulating him create a synergy spreading good qualities where after badness dies a natural death.

RV 4.26.02 : An Arya is duty bound to pay respect to all those who contribute to his welfare, more importantly to God who has created this universe, given us knowledge and as our inner guide always inspire us to be ethical at all times.

RV 5.34.6 : Members of a society aiming to boost general welfare should seek the company of Aryas – i.e., people with sound knowledge and character with a view to (a) increase knowledge, (b) always be physically and mentally motivated to walk down the righteous path, (c) be philanthropic, caring and humane.

RV 6.22.10 : An Arya is always a leader in giving a helping hand to all, even those at the lower level of the social ladder, to uplift their standards, cater for the necessary support, impart knowledge to them, and thus empower them to become an Arya.

RV 7.5.6 : A yogi who has attained self and God-realisation always does his utmost to help others to reach that same level. Likewise an Arya as a noble person should strive to make others noble in mind, body and spirit.

RV 7.18.7 : Leaders should encourage people to be Aryas - i.e., noble in thoughts, speech and deeds as the multiplying effect will give way for a healthier society.

RV 9.63.5 *'…krinvanto vishwamāryam'* May we strive to throw away evil and make the whole world noble in thoughts, speech and deeds.

RV 10.65.11 : Arya vrata visrijanto adhi kshami: An Arya is one who lives the noble qualities of non-violence, truth, purity …etc. and is ever ready to shun untruth, vice …etc. The rays of the sun purifies whatever it strikes, enlighten the whole world dispelling darkness. Likewise an Arya should spread goodness to the extent that no place is left for evil.

Prajā jyotirāgrah : An Arya follows the path of the divine grace. He not only lights his own path but also shows the light to others.

YV 33.82 defines Arya in the context of a nation, i.e. noble persons whose body, mind and spirit tread only on the path of virtue and strive to amplify the physical, moral / spiritual and social prosperity.

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanācharya
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya)
Arya Sabha Mauritius
RV : RigVeda ; YV : YajurVeda